1. द्वितीय कोष्ठ पूजा में त्रिकाल चौबीसी के अर्घ्य से पहले श्लोक दें लिखा है लेकिन श्लोक नहीं लिखा।

विशद याग मण्डल विधान

मण्डल

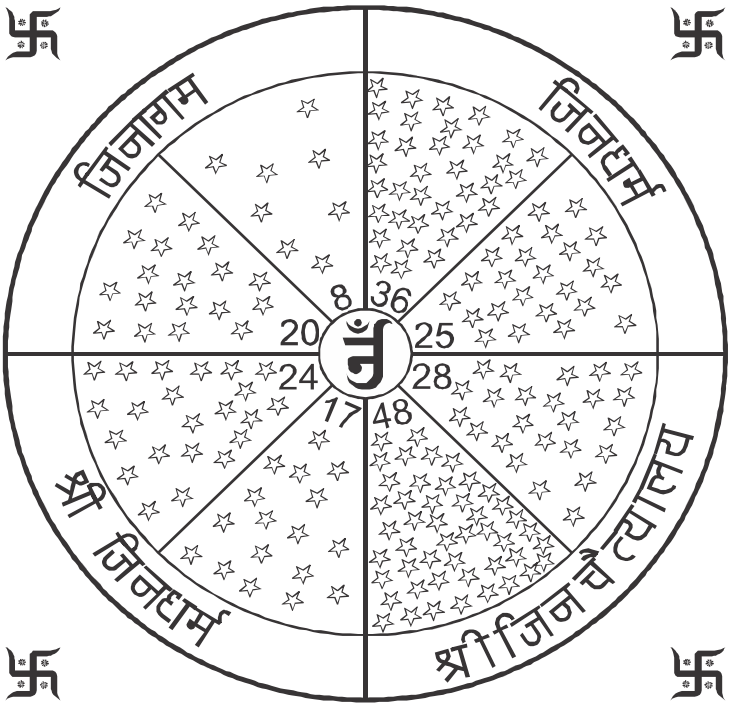

रचयिता

आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज

प्रकाशक

विशद साहित्य केन्द्र

कृति : **विशद याग मण्डल विधान**
कृतिकार : **प. पू. साहित्य रत्नाकर**
आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज
सहयोगी : ऐलक विदक्ष सागरजी, क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागर जी, आर्यिका भक्तिभारतीमाताजी, क्षुल्लिका वात्सल्यभारती माताजी
सम्पर्क : ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), ब्र. सपना दीदी (9829127533) ब्र. आस्था दीदी (9660996425), ब्र. आरती दीदी
संस्करण : प्रथम 2016 (1000 प्रतियाँ)
मूल्य : 51/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्राप्ति स्थल : (1) **विशद साहित्य केन्द्र**
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कुआँ वाल जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो. 9812502062
(2) **हरीश जैन**
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरु पाली
नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली
मो. 098181157971, 09136248971
(4) **सुरेश जैन,** पी-958, गली नं. 3, शान्ति नगर, दुर्गापुरा, जयपुर, मो. 9413336017

पुण्यार्जक :

e-mail : vishadsagar11@gmail.com
प्रकाशक : **विशद साहित्य केन्द्र**
मुद्रक : **पिक्सल 2 प्रिंट, जयपुर,** हेमन्त जैन -9509529502

समर्पण

संत परम्परा को अंगीकार कर मुनियों ने अपना ही नहीं वरन एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों का भला किया और कर रहे हैं। सभी जीवों के प्रति क्षमा का भाव रखते हैं, किसी जीवों को कष्ट नहीं पहुँचाते, उनका भाव हमेशा यही होता है कि सभी जीव सुखी एवं निरोगी रहें। कितना अंतर एक गृहस्थ और साधु में है। गृहस्थ तो मरने और मारने के लिए तत्पर रहता, सारे दिन आरंभ और परिग्रह के कार्य कर पाप का बंध करता रहता है, पाप के बीज निरंतर बोता रहता और सुख रूपी फल की इच्छा करता है लेकिन उसके भाग्य में दुख ही आता है, बीज के अनुसार फल की इच्छा रखना चाहिए। साधु निरन्तर पुण्य के हेतु एकत्रित करते हैं लेकन फल की इच्छा नहीं रखते उन्हें स्वतः ही स्वर्गों के सुख प्राप्त होते हैं। ऐसी भावना से गृहस्थ दानादि करते हैं। प्रभु की आराधना औरसाधु सेवा करने से सुख ही सुख प्राप्त होता है गुरुओं का आशीर्वाद उसे सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित करता है। **परम पूज्य गुरुदेव श्री विशद सागर जी महाराज** ने अपनी लेखनी से वृहद याज्ञ मण्डल विधान पहले ही लिखा हुआ, लेकिन समयाभाव रहने से लोगों की अनुकूलता को देखते हुए आचार्य श्री ने 'लघु याज्ञ मण्डल विधान' की रचना की।

गुरुदेव की निरन्तर अपनी लेखनी से नित नयी रचनाएँ करते रहें ऐसी भावना है।

नमोस्तु गुरुदेव!

संघस्थ : ब्र. सपना दीदी
9829127533

Ist Proof 8.1.2018

लघु शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, त्रैलोक्य वशंकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुःसंघोपसर्ग विनाशनाय, घाति कर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय। **अपवायं...अस्माकं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **मृत्युं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **रति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **क्रोधं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अग्नि भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वशत्रु भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्वविघ्नं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राजभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व चोर भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व दुष्ट भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मृग भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व परमत्रं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वात्म चक्र भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व शूल रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्षय रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कुष्ठ रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्रूररोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व नरमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गज मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वाश्व मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गो मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व महिष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व धान्य मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वृक्ष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गुल्म मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वपत्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व पुष्प मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व फल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राष्ट्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व देश मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व विष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व बेताल शाकिनी भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वेदनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मोहनीय** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कर्माष्टकं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **ॐ सुदर्शन महाराज मम चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शांतिं** कुरु कुरु।

सर्व जनानंदनं कुरु कुरु। **सर्व भव्यानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व गोकुलानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनंदनं** कुरु कुरु। **सर्व लोकानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व देशानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व यजमानानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व दुख हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।**

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम आरोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति मस्तु । ... कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चंद्रप्रभु वासुपूज्य-मल्लि-वर्धमान पुष्पदंत-शीतल मुनिसुव्रत-स्तनेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाऽशेषकल्मशाय दिव्यतेजो मूर्तये नमः। श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपाप प्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्वरोग उपसर्ग विनाशनाय सर्वपरक्रत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वदेशस्य चतुर्विध संघस्य सर्व विश्वस्य तथैव मम् (नाम) सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।
संपूजकानां प्रति पालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अर्घ्य

शांति धारा क रके हे प्रभू, अर्घ्य चढ़ाते मंगलकार।
विशद शांति को पाने हेतू, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवन पते शांतिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर गंधोदक अपने माथे से लगाएँ।)

मानो जिन गिरि से गिरी, जलधारा हे नाथ!।
गंधोदक उत्तमांग उर, विशद लगाएँ माथ ।।

Ist Proof 8.1.2018

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन (लघु)

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभू निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु विद्यमानविंशति जिन, अनन्तानन्तसिद्ध, निर्वाण भू समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, प्रभु मोह तिमिर विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाश दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाल

दोहा- **देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।**
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा- **अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।**
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।**
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पाते शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाजलिं क्षिपेत्।।

Ist Proof 8.1.2018

विशद लघु यागमण्डल विधान पूजा

स्थापना

दोहा- दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।
विशद हृदय में हे प्रभो! करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं जिनप्रतिष्ठा विधाने सर्वमंगलकारी यागमण्डलोक्ताजिनमुनयः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं जिनप्रतिष्ठा विधाने सर्वमंगलकारी यागमण्डलोक्ताजिनमुनयः !अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं जिनप्रतिष्ठा विधाने सर्वमंगलकारी यागमण्डलोक्ताजिनमुनयः! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

जल के शुभ कलश भराए, हम पूजा करने आए ।
परमेष्ठी मंगल गाए, चउ उत्तम शरण कहाए ।।1।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन जिन चरण चढ़ाएँ, संसार ताप विनशाएँ।
परमेष्ठी मंगल गाए, चउ उत्तम शरण कहाए ।।2।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत शुभकारी,हम चढ़ा रहे मनहारी ।
परमेष्ठी मंगल गाए, चउ उत्तम शरण कहाए ।।3।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्पों से पूज रचाएँ,, प्रभु क्षुधा रोग विनशाएँ ।
परमेष्ठी मंगल गाए, चउ उत्तम शरण कहाए ।।4।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ ।
परमेष्ठी मंगल गाए, चउ उत्तम शरण कहाए ।।5।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम दीप जलाते स्वामी,हो जाएँ मुक्ती गामी ।
परमेष्ठी मंगल गाए, चउ उत्तम शरण कहाए ।।6।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, प्रभु आठों कर्म नशाएँ।
परमेष्ठी मंगल गाए, चउ उत्तम शरण कहाए ।।7।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

फल सरस चढ़ाने लाए, शिव पद पाने को आए ।
परमेष्ठी मंगल गाए, चउ उत्तम शरण कहाए ।।8।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन यह अर्घ्य चढ़ाएँ, शास्वत शिव पदवी पाएँ ।
परमेष्ठी मंगल गाए, चउ उत्तम शरण कहाए ।।9।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- पूजा करके दे रहे, पद में शांतीधार ।
यही भावना है विशद, मन का नशे विकार ।।

शान्तये शांति धारा

दोहा- पूजा कर पुष्पांजलि, करते लेकर फूल।
शिवपथ के राही बनें, साधन पा अनुकूल ।।

पुष्पांजलिं छिपामि

Ist Proof 8.1.2018

जयमाला

दोहा- करें याग मण्डल विशद, पावन परम विधान।
परमेष्ठी के पद युगल, करते हैं जयगान ।।

(चौपाई)

पंच परमेष्ठी मंगल जानो, उत्तम शरण लोक में मानो।
भूत भविष्यत के जिन स्वामी, वर्तमान के शिवपथ गामी।।
विद्यमान जिन बीस बताए,जो विदेह में शास्वत गाए।
परम सिद्ध होते अविकारी, पावन अष्ट गुणों के धारी ।।
जैनाचार हैं पंचाचारी, तप धर गुप्ति धर्म के धारी ।
पच्चिस मूल गुणों को पाते, उपाध्याय ज्ञानी कहलाते ।।
साधू रत्नत्रय के धारी, संयमधर होते अनगारी ।
सम्यक् तपकर ऋद्धि जगाते,तीन लोक में पूजे जाते ।।
मंगलमय जिन धर्म कहाए, जीवों को शिव मार्ग दिखाए।
ॐकार मय श्री जिनवाणी, होती जन जन की कल्याणी ।।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य कहाए, चैत्यालय में शोभा पाए।
यज्ञेश्वर पद को हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ।।
विशद भाव यह रहे हमारे, विघ्न दूर हो जाएँ सारे ।
अनुक्रम से सब कर्म नशाएँ, पावन मोक्ष महा पद पाएँ ।।

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार ।
चार शरण को प्राप्त कर, पाएँ भवदधि पार ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- जिनके चरणों में विशद, वन्दन बारम्बार।
यज्ञेश्वर है लोक में, शिव पद के दातार।।

इत्याशीर्वादः

Ist Proof 8.1.2018

अथ प्रथम कोष्ठ पूजा

दोहा- परमेष्ठी मंगल तथा, उत्तम शरण महान ।
जिनकी अर्चा कर मिले, पावन पद निर्वाण।।

।। अथ प्रथकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

परमेष्ठी मंगलोत्तम शरण के अर्घ्य

(अर्द्ध शम्भू छन्द)

छियालिस मूलगुणों को पाए , अर्हत् केवलज्ञान जगाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो अनंत भवार्णवभय निवारकानन्त गुणस्तुताय अर्हते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सनातन हैं अविकारी, पावन अष्ट गुणों के धारी ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।2।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽष्टकर्म विनाशक निजात्म तत्त्वविभासक सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार के धारी गाए, परमेष्ठी आचार्य कहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।3।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽनवद्य विद्या–विद्योतनाय आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग पूर्व धारी श्रुत ज्ञानी, उपाध्याय हैं जग कल्याणी ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।4।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो द्वादशांग परिपूरण श्रुत पाठनोद्यत बुद्धि विभवोपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

साधू रत्नत्रय के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।5।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो घोरतपोऽभि–संस्कृत–ध्यान–स्वाध्याय निरत साधु परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

जिन अर्हत मंगल गाए,जग को सन्मार्ग दिखाए।
जिनपद हम पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।16।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽर्हत्मंगलेभ्योऽर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मंगल जिन सिद्ध कहाए, जो जगत पूज्यता पाए।
जिनपद हम पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।7।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो सिद्धमंगलेभ्योऽर्घ्यं निव.स्वाहा।

साधु जिन मंगलकारी, होते रत्नत्रय धारी ।
जिनपद हम पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।8।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो साधुमंगलेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन धर्म केवली गाए, जो मंगलमय कहलाए।
जिनपद हम पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।9।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो केवलिप्रज्ञाप्त धर्ममंगलेभ्योऽर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम जानो, जो जगत पूज्य हैं मानो।
जिनपद हम पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।10।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽर्हलोकोत्तमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम सिद्ध बताए, जो नित्य निरंजन गाए ।
जिनपद हम पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।11।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो सिद्धलोकोत्तमेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

लोकोत्तम साधु कहाए, जो रत्नत्रय निधि पाए।
जिनपद हम पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।12।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो साधुलोकोत्तमेभ्योऽर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जिनधर्म लोकोत्तम जानो, जिनवर प्रणीत जो मानो।
जिनपद हम पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।13।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो केवलिप्रज्ञप्तधर्म लोकोत्तमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शरणभूत जग में विशद, जिन अर्हत् भगवान ।
जिनका तीनों योग से, करते हम गुणगान ।।14।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योऽर्हत्शरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरणभूत जिन सिद्ध हैं, तीनों लोक त्रिकाल ।
गाते हैं जिनकी विशद, भाव सहित जयमाल ।।15।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्योसिद्धशरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरण भूत जिनसाधु हैं, मंगलमयी महान् ।
साधु शरण को प्राप्तकर, पाएँ पुण्य निधान ।।16।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो साधुशरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरणभूत जिनधर्म है, जिनवर कथित प्रधान ।
जिसको पाके जीव शुभ, करते हैं कल्याण ।।17।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो केवली प्रज्ञप्त धर्म शरणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार ।
शरण चार हैं लोक में, वंदनीय शुभकार।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिप्रभृति धर्मशरणांत प्रथम वलय स्थित सप्तदश जिनाधीश यागदेवताभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

अथ द्वितिय कोष्ठ पूजा

दोहा- तीर्थंकर त्रय काल के, विद्यमान जिन बीस ।
छियालिस गुणधारी सुपद, झुका रहे हम शीश।।

।।अथ द्वितीयकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

त्रिकाल चौबीसी के अर्घ्य

(चौपाई)

'श्री निर्वाण' प्रथम जिनराज, 'ऋषभ नाथ' पद पूजें आज।
'महापद्म जिनवर' को ध्याय, पद में सादर शीश झुकाय ।।1।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री निर्वाण ऋषभ महापद्म तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'सागर' जिनवर 'अजित' जिनेश, 'श्री सुरदेव' कहे तीर्थेश ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।2।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री सागर अजित सुरदेव तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'महासाधु' सम्भव जिनराज, 'श्री सुपार्श्व' पद पूजें आज ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।3।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री महासाधु संभव सुपार्श्व तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'श्री विमल प्रभ' हुए महान, चौथे 'अभिनन्दन' भगवान।
श्री स्वयं प्रभ जी तीर्थेश, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री विमल अभिनन्दन स्वयंप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीधर' जिनवर 'सुमति' प्रधान, 'श्री सर्वात्मभूत' गुणवान ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।5।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री श्रीधर सुमति सर्वात्मभूत तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

'श्री सुदत्त' पदम प्रभ जान, 'देवपुत्र' छठवें भगवान ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।6।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री सुदत्त पद्मप्रभ देवपुत्र तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'श्री अमल प्रभ' प्रभू सुपार्श्व, जिन 'कुलपुत्र' हैं मानो पार्श्व।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।7।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री अमलप्रभ सुपार्श्व कुलपुत्र तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

' उद्धर जी' 'श्री चन्द' जिनेश,'श्री उदंक' अष्टम तीर्थेश ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।8।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री उद्धर चन्द्रप्रभ उदंक तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'अग्निदत्त 'श्री सुविधि जिनेश, 'प्रोष्ठिल' जी भावी तीर्थेश ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।9।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री अग्निदत्त सुविधि प्रोष्ठिल तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री संयम' जिन 'शीतल नाथ', 'जय कीर्ति' जिन हैं नरनाथ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।10।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री संयम शीतल जयकीर्ति तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'श्री शिवनायक' 'श्रेयस जिनेश', 'मुनिसुव्रत' हैं पूज्य विशेष।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।11।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री शिवनायक श्रेयस मुनिसुव्रत तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्पांजलि' हैं कुसुम समान, 'वासुपूज्य' 'अर' पूज्य महान ।
तीनकाल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।12।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री पुष्पांजलि वासुपूज्य अर तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

'शिवगण' 'विमलनाथ' भगवान, श्री 'निष्पाप' हैं गुण की खान।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।13।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री शिवगण विमलनाथ निष्पाप तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री उत्साह 'अनन्त' जिनेश, 'निष्कषाय' भावी तीर्थेश।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।14।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री उत्साह अनन्त निष्कषाय तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानेश्वर 'श्री 'धर्म जिनेश','विपुल' जिनेश्वर पूज्य विशेष।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।15।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री ज्ञानेश्वर धर्मनाथ विपुल तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमेश्वर' श्री 'शांति जिनेन्द्र', 'निर्मल' जिन पूजें शत इन्द्र ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।16।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री परमेश्वर शांतिनाथ निर्मल तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विमलेश्वर' जिन 'कून्थू नाथ', 'चित्रगुप्त' जिन हुए सनाथ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।17।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री विमलेश्वर कुन्थुनाथ चित्रगुप्त तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'यशोधर' 'अरह जिनेश', 'समाधिगुप्त' भावी तीर्थेश ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।18।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री यशोधर अरहनाथ समाधिगुप्त तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

'कृष्णमति' जिन 'मल्ली नाथ', झुके 'स्वयंभू' जिन पदमाथ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।19।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री कृष्णमति मल्लिनाथ स्वयंभू तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानमति' 'मुनिसुव्रत नाथ', 'अनिवर्तक' तीर्थंकर साथ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।20।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री ज्ञानमति मुनिसुव्रत अनिवर्तक तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुद्धमति' जिनवर 'नमिनाथ', 'श्री जय' पद में जोड़ें हाथ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।21।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री शुद्धमति नमिनाथ जयनाथ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'श्रीभद्र' 'नेमि' तीर्थेश, 'विमल' जिनेश्वर पूज्य विशेष।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।। 22।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री भद्र नेमिनाथ विमल तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

''अतिक्रान्त' जिन 'पार्श्व' महान, 'देवपाल' भावी भगवान ।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।23।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री अतिक्रान्त पार्श्वनाथ देवपाल तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जिनवर 'शांत' 'वीर' भगवान, 'अनन्तवीर्य' हैं पूज्य महान।
तीन काल के यह तीर्थेश, जिन पद पूजें भक्त विशेष।।24।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे श्री शांत वर्धमान अनन्तवीर्य तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भूत काल के चौबिस जान,वर्तमान के भी भगवान।
भावी होगें चौबीस मान, करें विशद जिनका गुणगान।।25।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे यागमण्डलेश्वर द्वितीयवलयोन्मुद्रित अतीत अनागत वर्तमान काल संबंधी समस्त तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

तृतिय कोष्ठ

दोहा- शास्वत क्षेत्र विदेह के, विहरमान तीर्थेश ।
पूज रहे हम भाव से, जिन पद यहाँ विशेष ।।
।। तृतिय कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

विद्यमान 20 तीर्थंकर के अर्घ्य

(चाल छंद)

जिन विहरमान कहलाए, 'सीमन्धर' पहले गाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।1 ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री सीमंधरजिनाय जलादि अर्घ्यं निव.स्वाहा।

दूजे 'युगमन्धर' गाए, जो शिव पदवी को पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।2 ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री युगमंधरजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीजे जिन 'बाहु 'कहाए, जो बाहूबल को पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।3 ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री बाहुजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनराज 'सुबाहू' जानो, चौथे तीर्थंकर मानो।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।4 ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री सुबाहुजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचम 'सुजात' जिन स्वामी,बतलाए शिवपुर गामी।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।5 ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री संजातकजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जिनराज 'स्वयंप्रभ' गाए, छठवें जिनवर कहलाए ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।6 ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री स्वयंप्रभजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

'वृषभानन' प्रभू हमारे, सप्तम जिन तारण हारे।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।7।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री वृषभाननजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हे 'अनन्तवीर्य!' जिन स्वामी, तुम पद में विशद नमामी ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।8।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री अनंतवीर्यजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कहलाए 'सूर्यप्रभ' मेरे, भव भव के मैटें फैरे ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।9।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री सूरिप्रभजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हम 'विशाल कीर्ति' को ध्याएँ, जिन पद में शीश झुकाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।10।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री विशालकीर्तिजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जिनराज 'वज्रधर' गाए, अतिशय महिमा दिखलाए ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।11।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री वज्रधरजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हम 'चन्द्रानन' को ध्याएँ, अतिशय महिमा को गाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।12।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री चन्द्राननजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'जिन भद्रबाहू' कहलाए, जो विशद भद्रता पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।13।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री भद्रबाहुजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनराज 'भुजंगम' जानो, चौदहवे जिनवर मानो ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।14।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री भुजंगमजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

'ईश्वर' जिनराज निराले, भव तम को हरने वाले ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।15।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री ईश्वरजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'नेमिप्रभ' मेरे , काटो भव भव के फेरे ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।16।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठ महोत्सवे विद्यमान श्रीनेमिप्रभजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'वीरसेन' अविकारी, पद पूजें हे त्रिपुरारी !।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।17।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री वीरसेनजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हे 'महाभद्र' जिनदेवा!, हम करें चरण की सेवा ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।18।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री महाभद्रजिनाय जलादि अर्घ्यं निव. स्वाहा।

जिनराज 'देवयश' गाए, जो जग में यश फैलाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।19।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री देवयशजिनाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अजित वीर्य' को ध्यायें, जिनकी हम महिमा गाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।20।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे विद्यमान श्री अजितवीर्यजिनाय जलादि अर्घ्यं निव.स्वाहा।

हैं बीस तीर्थंकर भाई, फैली जिनकी प्रभुताई ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते ।।21।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्ब प्रतिष्ठाध्वरोद्यापने मुख्य पूजार्ह वलयोन्मुद्रित विदेह क्षेत्रे षष्ठिसहितैकशतजिनेश संयुक्त नित्यविहरमाण विंशति जिनेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

चतुर्थ कोष्ठ

दोहा- आठ मूलगुण सिद्ध के, होते अपरम्पार ।
जिनकी अर्चा हम यहाँ, करते बारम्बार ।।
।। चतुर्थ कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

सिद्धों के 8 मूलगुण

(सखी छंद)

जो ज्ञानावरण नशाए, वे केवल ज्ञान जगाए।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी ।।1 ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अनंतदर्शनगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं दर्शावरण विनाशी, प्रभु दर्शानन्त प्रकाशी।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी ,जो हुए मोक्ष पुर वासी ।।2 ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अव्याबाधत्वगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मोह कर्म विनशाए, वे सुखानन्त को पाए।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी ।।3 ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अनंतज्ञानगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अन्तराय विनशाए, वे वीर्यानन्त जगाए ।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी ।।4 ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अनंतसुखगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

हैं आयु कर्म के नाशी, गुण अवगाहन के वासी ।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी ।।5।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने सूक्ष्मत्वगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नाम कर्म विनशाए, गुण सूक्ष्मत्व वे पाए ।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी ।।6।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अवगाहनत्वगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गोत्र कर्म विनाशाए, वे अघरुलघु गुण पाए।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी ।।7।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अगुरुलघुत्वगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं वेदनीय परिहारी, गुण अव्यावाध के धारी ।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी ।।8।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे सिद्ध परमेष्ठिने अनंतवीर्यत्वगुणप्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अष्टकर्म विनशाए, फिर अष्ट सुगुण प्रगटाए।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी ।।9।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठा महोत्सवे पूजार्ह चतुर्थ वलयोन्मुद्रित सिद्ध परमेष्ठिने अष्टगुणप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

अथ पंचम कोष्ठ

दोहा- छत्तिस पाते मूलगुण , जैनाचार्य महान ।
विशद भाव से आज हम, करते हैं गुणगाान ।।

।। पंचम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

आचार्य के छत्तिस गुण

(चौपाई)

ज्ञानाचार के धारी जानो, जैनाचार्य श्रेष्ठ पहिचानो ।
जिनकी यह जग महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए ।।1 ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचार संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गाए दर्शनाचार्य के धारी, जैनाचार्य रहे अविकारी ।
जिनकी यह जग महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए ।।2 ।।

ॐ ह्रीं दर्शनाचार संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि चारित्राचार के धारी, हैं आचार्य श्रेष्ठ अनगारी ।
जिनकी यह जग महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए ।।3 ।।

ॐ ह्रीं चारित्राचार संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपाचार्य को पाने वाले, होते हैं आचार्य निराले ।
जिनकी यह जग महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए ।।4 ।।

ॐ ह्रीं तपाचार संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्याचार के धारी गाए, जैनाचार्य श्रेष्ठ कहलाए ।
जिनकी यह जग महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए ।।5 ।।

ॐ ह्रीं वीर्याचार संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

बारह तप के अर्घ्य

(चाल छन्द)

मुनि अनशन तप को पावें, वे अपने कर्म नशावें ।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।6।।

ॐ ह्रीं अनशन तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कर ऊनोदर भाई, पावें जग में प्रभुताई।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।7।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्य तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निव. स्वाहा।

होते मुनि रस के त्यागी, निज आतम के अनुरागी ।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।8।।

ॐ ह्रीं रसपरित्याग तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विविक्त शैयाशन पावें, तपकर वे कर्म खिपावें ।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।9।।

ॐ ह्रीं विविक्त शय्यासन तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि काय क्लेश धर ज्ञानी, तप धारें जग कल्याणी ।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।10।।

ॐ ह्रीं काय–क्लेश तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप व्रत संख्यान जो पावें, वे कर्म जयी कहलावें ।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।11।।

ॐ ह्रीं वृत्ति परिसंख्यान तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो प्रायश्चित्त तप करते,वे अपने पातक हरते ।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।12।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्त तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

Ist Proof 8.1.2018

वैयावृत्ती तप धारी, होते हैं करुणाकारी ।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।13।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्ती तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

जो विनय सुतप को धारें, वे मुक्ती मार्ग सम्हारें ।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।14।।

ॐ ह्रीं विनय तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

तप स्वाध्याय के धारी, मुनि जग के करुणाकारी ।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।15।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

व्युत्सर्ग सुतप जो पाते, वे अपने कर्म नशाते ।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।16।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

तप ध्यान करें अविकारी, मुनिवर जो हैं अनगारी ।
आचार्य सुतप के धारी, होते हैं मंगलकारी ।।17।।

ॐ ह्रीं ध्यान तपोऽभियुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

दस धर्म के अर्घ्य

(बेसरी छन्द)

उत्तम क्षमा धर्म शुभकारी, पाते हैं जो मुनि अनगारी ।
धर्म विशद हम भी अपनाएँ, कर्म नाश कर शिवपुर जाएँ ।।18।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम मार्दव धर्म जो पाते , प्राणी वे सब मुक्ती पाते ।
धर्म विशद हम भी अपनाएँ, कर्म नाश कर शिवपुर जाएँ ।।19।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

उत्तम आर्जव धर्म निराला, भव तम को जो हरने वाला ।
धर्म विशद हम भी अपनाएँ, कर्म नाश कर शिवपुर जाएँ।।20।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम शौच धर्म के धारी, प्राणी होते करुणाकारी ।
धर्म विशद हम भी अपनाएँ, कर्म नाश कर शिवपुर जाएँ।।21।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम सत्य धारने वाले, साधु जग में कहे निराले ।
धर्म विशद हम भी अपनाएँ, कर्म नाश कर शिवपुर जाएँ।।22।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते उत्तम संयम धारी, पावन कहे गये अविकारी ।
धर्म विशद हम भी अपनाएँ, कर्म नाश कर शिवपुर जाएँ ।।123।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम तप के धारी ज्ञानी, होते जन जन के कल्याणी।
धर्म विशद हम भी अपनाएँ, कर्म नाश कर शिवपुर जाएँ।।24।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम त्याग के धारी गाए, मोक्ष मार्ग साधू अपनाए।
धर्म विशद हम भी अपनाएँ, कर्म नाश कर शिवपुर जाएँ।।25।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम आकिंचन के धारी, साधू होते हैं अविकारी ।
धर्म विशद हम भी अपनाएँ, कर्म नाश कर शिवपुर जाएँ।।26।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य जो पावें ,निज आतम का ध्यान लगावें ।
धर्म विशद हम भी अपनाएँ, कर्म नाश कर शिवपुर जाएँ।।27।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित आचार्य परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

तीन गुप्ति

(चाल छन्द)

ऋषि मनोगुप्ति के धारी, आचार्य हैं मंगलकारी ।
जिन पद हम पूज रचाते, जग में जो पूजे जाते ।।28।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधारक आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि वचन गुप्ति को पाते, वे जैनाचार्य कहाते ।
जिनपद हम पूज रचाते, जो जग में जो पूजे जाते ।।29।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिधारक आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि काय गुप्ति को पावें, आचार्य श्रेष्ठ कहलावें।
जिनपद हम पूज रचाते, जो जग में जो पूजे जाते ।।30।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिधारक आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक

जो समता हृदय जगावें, वे जैनाचार्य कहावें।
हैं छत्तिस गुण के धारी, आचार्य जगत उपकारी ।।31।।

ॐ ह्रीं सामायिक आवश्यक कर्मधारी आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि हैं जिन वन्दन कारी, आचार्य परम पद धारी ।
हैं छत्तिस गुण के धारी, आचार्य जगत उपकारी ।।32।।

ॐ ह्रीं वंदना आवश्यक निरत आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्तुति आवश्यक धारी,आचार्य श्री अविकारी ।
हैं छत्तिस गुण के धारी, आचार्य जगत उपकारी ।।33।।

ॐ ह्रीं स्तवन आवश्यक संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वाध्याय करें नित ज्ञानी, आचार्य जगत कल्याणी ।
है छत्तिस गुण के धारी, आचार्य जगत उपकारी ।।34।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय आवश्यक संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

मुनि प्रतिक्रमण को पाते, आचार्य श्री कहलाते ।
हैं छत्तिस गुण के धारी, आचार्य जगत उपकारी ।।35।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यक संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं कायोत्सर्ग के धारी, आचार्य श्री अनगारी ।
हैं छत्तिस गुण के धारी, आचार्य जगत उपकारी ।।36।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गावश्यक संयुक्त आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप धर्म आवश्यक धारी, त्रय गुप्ती पंचाचारी।
हैं छत्तिस गुण के धारी, आचार्य जगत उपकारी ।।37।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोद्यापने पूजार्ह पञ्चम वलयोन्मुद्रित षट्त्रिंशत मूलगुण संयुक्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

षष्टम कोष्ठ

दोहा- उपाध्याय के गुण कहे, आगम में पच्चीस ।
भव्य जीव अर्चा करें, चरण झुकाकर शीश ।।

।। षष्ठमकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

ग्यारह अंग के अर्घ्य

।। चौपाई ।।

कथन करें आचार का भाई, अचारांग कहा शिवदायी ।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी ।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टादश सहस्र पद भूषित प्रथम आचारांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र कृतांग सूत्र में जानो, कथन करे आगम का मानो ।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी ।।2।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशत सहस्र पद भूषित द्वितीय सूत्रकृतांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थानों की चर्चा भाई, स्थानांग में श्रेष्ठ बताई।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी ।।3।।

ॐ ह्रीं द्विचत्वारिंशत सहस्र पद भूषित तृतीय स्थानांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यादिक का कथन बताया, समवायांग शास्त्र में गाया ।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी ।।4।।

ॐ ह्रीं एकलक्ष चतुःषष्ठि सहस्र पद भूषित चतुर्थ समवायांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

व्याख्या प्रज्ञप्ती शुभकारी, है विज्ञान मयी मनहारी ।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी ।।5।।

ॐ ह्रीं द्वयलक्ष अष्टविंशति सहस्रपद भूषित पंचम व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन का वैभव दर्शाए, ज्ञातृ धर्म कथांग कहाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी ।।6।।

ॐ ह्रीं पंचलक्षषट्पंचाशत सहस्रपद भूषित षष्टम् ज्ञातृधर्म कथांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक की चर्चा बतलाए, उपाशकाध्यानांग कहलाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी ।।7।।

ॐ ह्रीं एकादशलक्षसप्तति सहस्र पद भूषित सप्तम उपासगाध्ययनांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतःकृत दशांग कहलाए, उपशर्ग विजय की महिमा गाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी ।।8।

ॐ ह्रीं त्रयोविंशतिलक्षअष्टाविंशति सहस्र पद भूषित अष्टम अन्तःकृतदशांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुत्तरोपपादिक दशांग कहाए, कथन अनुत्तर का शुभ आए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी ।।9।।

ॐ ह्रीं द्विनवतिलक्ष चतुर्चत्त्वारिंशद् सहस्र पद भूषित नवम् अनुत्तरोपपादिक दशांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रश्नोत्तर जिसमें बतलाए,प्रश्न व्याकरण अंग कहाए।।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी ।।10।।

ॐ ह्रीं त्रिनवतिलक्षषोडश सहस्र पद भूषित दशम व्याकरणांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

विपाकसूत्र शुभ अंग कहाए , पुण्य पाप का फल बतलाए।
दिव्य ध्वनि जिनवर की वाणी, पूज रहे हम जग कल्याणी ।।11।।

ॐ ह्रीं एककोटि चतुरशीतिलक्षपद भूषित विपाक सूत्रांग श्रुतज्ञानधारकाय श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूर्व के अर्घ्य

(सखी छन्द)

उत्पाद पूर्व कहलाए, उत्पाद स्वरूप बताए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।1।।

ॐ ह्रीं कोटि पद युक्त उत्पाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रायणीय पूर्व कहाए, स्व समय कथन बतलाए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।2।।

ॐ ह्रीं षड् नवति लक्षपद युक्त अग्रायणीय पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छदमस्थ कथन को गाए, वीर्यानुवाद कहलाए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।3।।

ॐ ह्रीं सप्तति लक्षपद युक्त वीर्यानुवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्तिनास्ति प्रवाद में भाई, नय की कथनी बतलाई ।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।4।।

ॐ ह्रीं षष्ठि लक्षपद युक्त अस्तिनास्ति पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

ज्ञानों का वर्णन कारी, है ज्ञान प्रवाद शुभकारी ।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।5।।

ॐ ह्रीं नव नवति लक्षपद युक्त ज्ञान प्रवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सत्यासत्य बताए , वह सत्य प्रवाद कहाए।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।6।।

ॐ ह्रीं एक कोटि षट्पद युक्त सत्यप्रवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम प्रवाद से जानो, शुभ आतम को पहिचानो ।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।7।।

ॐ ह्रीं षड् विंशति कोटिपद युक्त आत्मप्रवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कर्म बन्ध को गाए, वह कर्म प्रवाद कहाए ।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।8।।

ॐ ह्रीं एक कोटि अशीति लक्षपद युक्त कर्मप्रवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है पापों का परिहारी, प्रत्याख्यान पूर्व शुभकारी ।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।9।।

ॐ ह्रीं चतुरशीति लक्षपद युक्त प्रत्याख्यान पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यानुवाद में मानो ,विद्या मंत्रों को जानो ।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।10।।

ॐ ह्रीं एककोटि दश लक्षपद युक्त विद्यानुवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि चन्द नक्षत्र बताए, कल्याणवाद कहलाए।

Ist Proof 8.1.2018

शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।11।।

ॐ ह्रीं षड् विंशति कोटिपद युक्त कल्याणवाद पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ प्राणवाय में भाई, प्राणों की कथनी गाई ।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।12।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश कोटिपद युक्त प्राणवाय पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ काव्य शिल्प विद्याएँ, सब क्रिया विशाल में आएँ।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।13।।

ॐ ह्रीं अष्ट कोटिपद युक्त क्रियाविशाल पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लोक बिन्दु कहलाए, व्यवहार अष्ट बतलाए ।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्द्धाधिक द्वादश कोटिपद युक्त त्रैलोक्यबिन्दु पूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अंग एकादश गाए, पूरव चौदह कहलाए ।
शुभ दिव्य देशना भाई, इस जग में पूज्य बताई ।।15।।

ॐ ह्रीं अंगपूर्वधारक उपाध्याय परमेष्ठिने नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

सप्तम कोष्ठ

दोहा- गुण अट्ठाइस साधु के, जिनवर कहे विशेष।
पालन करते जो विशद, धार दिगम्बर भेष।।

।। सप्तमकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

साधु परमेष्ठी के 28 अर्घ्य

चौपाई

परम अहिंसा व्रत के धारी, साधू होते हैं अनगारी ।
सुर-नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद में हम अर्घ्य चढ़ाते ।।1।।

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रतधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सत्य महाव्रत धारी गाए, पावन मोक्ष मार्ग अपनाए ।
सुर- नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद में हम अर्घ्य चढ़ाते ।।2।।

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रतधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रताचौर्य के धारी जानो, संयम पालन करते मानो ।
सुर- नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद में हम अर्घ्य चढ़ाते ।।3।।

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रतधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ब्रह्मचर्य व्रत धारी गाए, शिवमग चारी जो कहलाए।
सुर- नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम अर्घ्य चढ़ाते ।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रतधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

परिग्रह चौबीस भेद बताए, जिससे विरहित साधू गाए ।
सुर- नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद में हम अर्घ्य चढ़ाते ।।5।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रतधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ईया समिति के धारी गाए, साधू रत्नत्रय को पाए ।
सुर-नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद में हम अर्घ्य चढ़ाते ।।6।।

ॐ ह्रीं ईर्या समितिधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

भाषा समिति के धारी जानो, अविकारी साधू हों मानो ।
सुर-नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद में हम अर्घ्य चढ़ाते ।।7।।

ॐ ह्रीं भाषा समितिधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते समिति एषणा धारी, रत्नत्रय धारी अनगारी ।
सुरनर जिनकी महिमा गाते, जिन पद में हम अर्घ्य चढ़ाते ।।8।।

ॐ ह्रीं एषणा समितिधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समिति आदान निक्षेपण गाई, साधू पालन करते भाई ।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिन पद में हम अर्घ्य चढ़ाते ।।9।।

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपण समितिधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मुनि व्युत्सर्ग समिति के धारी, भवि जीवों के करुणाकारी ।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिन पद में हम अर्घ्य चढ़ाते ।।10।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समितिधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मोतियादाम छन्द

इन्द्रिय स्पर्शन है दुखकार, विजय करते जिस पे अनगार ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।।11।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रिय विकार विरत साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधु हों रसना के जयकार,साधना करते हो अविकार ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।।12।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय विकार विरत साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घ्राण इन्द्रिय के मुनि जयवान, करें निज पर का जो कल्याण।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।।13।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय विकार विरत साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चक्षु इन्द्रिय पर विजय विशेष, करें धर परम दिगम्बर भेष।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।।14।।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रिय विकार विरत साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निव. स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

साधु कर्णेन्द्रिय के जयवान, लोक में जो हैं महिमावान ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।।15।।

ॐ ह्रीं श्रोत्रेन्द्रिय विकार विरत साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधु होते हैं समतावान, करें निज आतम का नित ध्यान ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।।16।।

ॐ ह्रीं समता आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन्दना आवश्यक कर्तव्य, पालते मुनिवर है जो भव्य।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।।17।।

ॐ ह्रीं वन्दना आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधु स्तुति गुण पालें आप, नशाने वाले जग के पाप ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।।18।।

ॐ ह्रीं स्तुति आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

करें मुनिवर नित प्रत्याख्यान, विशद करते निज आतम ध्यान ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।।19।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रहा गुण प्रतिक्रमण शुभकार, क्षमा के धारी मुनि अनगार ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।।20।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देह से करें राग उत्सर्ग, साधु गुण पावें कायोत्सर्ग।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य ।।21।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग आवश्यक गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

चाल छन्द

मुनिकेश लुंच गुणधारी, होते पावन अविकारी ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ।।22।।

ॐ ह्रीं केशलोंचन नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि चेल रहित कहलाए, वस्त्रों से राग हटाए।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वथा वस्त्र त्याग नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादिअर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि अस्नान गुण धारी, होते हैं करुणाकारी ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ।।24।।

ॐ ह्रीं अस्नान नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षिति शयन मूलगुण पाते, भोगों से राग हटाते ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ।।25।।

ॐ ह्रीं भूशयन नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दातुन मंजन के त्यागी, मुनि मुक्ती पद अनुरागी ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ।।26।।

ॐ ह्रीं अदन्तधोवन नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि एक भुक्ति के धारी, संयम पालें अविकारी।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ।।27।।

ॐ ह्रीं एकभुक्ति नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधू स्थिर आहारी, होते हैं ब्रह्म विहारी ।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ।।28।।

ॐ ह्रीं स्थितभोजन नियमधारक साधु परमेष्ठिभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अट्ठाइस मूलगुण पालें, साधू जिनधर्म सम्हालें।
हम जिनकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते ।।29।।

ॐ ह्रीं अरविंशति गुण प्राप्त श्री साधु परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

अष्टम कोष्ठ

दोहा- अष्ट ऋद्धियाँ के विशद, भेद हैं अड़तालीस।
पुष्पांजलिं कर पूजते, ऋद्धी धार ऋशीष ।।

अष्टम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ऋद्धियों के अड़तालीस अर्घ्य

(केसरी छन्द)

केवलज्ञान ऋद्धि जो पावें, लोकालोक प्रकाश करावें ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।1 ।।

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

मनःपर्यय ऋजुमति के धारी, जग में गाए मंगलकारी ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।2 ।।

ॐ ह्रीं ऋजुमति मनःपर्यय बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

विपुलमति मनः पर्यय ज्ञानी , होते वीतराग विज्ञानी।।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।3 ।।

ॐ ह्रीं विपुलमति मनःपर्यय बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

देशावधि ऋद्धी शुभ गाई, ऋषिवर पाते हैं सुखदायी।
परमावधि ऋद्धी के धारी, ऋषिवर पावन हों अविकारी।।4 ।।

ॐ ह्रीं देशावध्यादि बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

कोष्ठ बुद्धि ऋद्धीधर जानो, साधू ज्ञान जगाएँ मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।5 ।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

ऋद्धि पदानुसारी ज्ञानी, पावें जग जन की कल्याणी ।।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।6।।

ॐ ह्रीं पदानुसारी बुद्धि ऋद्धिारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

बीज बुद्धि ऋद्धी जो पावें, पूर्ण शास्त्र का ज्ञान करावें ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।7।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ऋषि संभिन्न श्रोत्रृधर गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।8।।

ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्व बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दूर स्पर्श ऋद्धी प्रगटावें , सूर्य चन्द को भी छू जावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।9।।

ॐ ह्रीं दूर स्पर्श बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दूर आस्वाद ऋद्धी प्रगटावें, स्वाद दूर वस्तू का पावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।10।।

ॐ ह्रीं दूर अस्वाद बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दूर घ्राण ऋद्धीधर जानो, दूर गंध को पावें मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।11।।

ॐ ह्रीं दूर घ्राण बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दूरावालोकन ऋद्धी धारी, होते दूरावलोकन कारी ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।12।।

ॐ ह्रीं दूरावलोकन बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दूर श्रवण ऋद्धी प्रगटावें, दूर शब्द को भी सुन पावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।13।।

ॐ ह्रीं दूर श्रवण बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

दश पूर्वित्व ऋद्धिधर ज्ञानी, ज्ञान जगाते जग कल्याणी
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।14।।

ॐ ह्रीं दश पूर्वित्व बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

चौदह पूर्व ऋद्धि जो पावें, भाव अर्थ सबको समझावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।15।।

ॐ ह्रीं चौदहपूर्व बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ऋषि प्रत्येक बुद्धिधर गाए, जो जग को सन्मार्ग दिखाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।16।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जो वादित्व ऋद्धि प्रगटावें, परवादी को शीघ्र हरावें
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।17।।

ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

अग्नि पुष्प जल जंघा जानो, श्रेष्ठ पत्र ऋद्धी धर मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।18।।

ॐ ह्रीं अग्निपुष्पजलजंघा ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

गगन गमन ऋद्धी के धारी, चारण ऋद्धी धर अनगारी ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।19।।

ॐ ह्रीं गगन गमन चारण ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

अणिमा आदि विक्रिया धारी ,. ऋद्धी धर होते अविकारी ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।20।।

ॐ ह्रीं अणिमा विक्रिया ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

अन्तर्धान विक्रिया पावें, ऋद्धी धारी संत कहावें ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।21।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धान विक्रिया ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

उग्र सुतप ऋद्धी प्रगटाते, उनकी सुर नर महिमा गाते ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।22।।

ॐ ह्रीं उग्र सुतप ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दीप्ति सुतप ऋद्धीधर जानो, तन में कांति जगाते मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।23।।

ॐ ह्रीं दीप्ति सुतप ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

उग्र तप्त ऋद्धी प्रगटावें , भोजन क्षण में पूर्ण पचावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।24।।

ॐ ह्रीं सुतप्त ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

साधु महातप ऋद्धीधारी, कर्म निर्जरा करते भारी ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।25।।

ॐ ह्रीं महातप ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ऋद्धि घोर तप पाने वाले, साधू जग में रहे निराले ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।26।।

ॐ ह्रीं घोर तप ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

घोर पराक्रम ऋद्धी धारी , होते हैं तप वृद्धीकारी ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।27।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

साधू घोर ब्रह्मचर्य पावें, शील व्रतों के धारि कहावें ।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।28।।

ॐ ह्रीं घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

(पाइता छन्द)

मन बल ऋद्धी के धारी, सद् ज्ञान जगावें भारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।29।।

ॐ ह्रीं मन बल ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

बल वचन ऋद्धि प्रगटाते, वे सकल शास्त्र पढ़ जाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।30।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

बल काय ऋद्धि जो पावें, वे अतिशय शक्ति बढ़ावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।31।।

ॐ ह्रीं काय बल ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ऋषि आमर्षौषधि धारी, होते पर रोग निवारी ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।32।।

ॐ ह्रीं आमर्षौधि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

क्ष्वेलौषधि ऋद्धि जगावें, जो क्ष्वेल से रोग नशावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।33।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ऋद्धी जल्लौषधि पावें, जल्ल छूते रुज नश जावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।34।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ऋषि मल्लौषधि के धारी, का मल हो रोग निवारी ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।35।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ऋषि विडौषधी धर गाए, करुणा की धार बहाए।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।36।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सर्वौषधि ऋद्धी धारी , की पद रज रोग निवारी ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।37।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

आस्याविष ऋद्धी जगाए, विष भी निर्विषता पाए।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।38।।

ॐ ह्रीं आस्याविष ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दृष्टी विष ऋद्धी धारी , होते हैं करुणाकारी ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।39।।

ॐ ह्रीं दृष्टी ऋद्धिधारकेभ्यो नमःअर्घ्यं नि.स्वाहा।

आशीर्विष ऋद्धी जगाते, ना क्रोध दृष्टि दिखलाते ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।40।।

ॐ ह्रीं आशीर्विष ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दृष्टी विष ऋद्धी धारी, के अन्न हो मधु सम भारी ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।41।।

ॐ ह्रीं दृष्टि विष ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ऋषि क्षीर स्रावी कहलाते, नीरस जो रस मय पाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।42।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावी ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

मधु स्रावी ऋद्धी धारी, के अन्य हो मधु सम भारी ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।43।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावी ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

घृत स्रावी ऋद्धी जगावें, घृत सम भोजन को पावें ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।44।

ॐ ह्रीं घृतस्रावी ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ऋषि अमृत स्रावी गाए,अमृत सम अन्न को पाए ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।45।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ist Proof 8.1.2018

अक्षीण ऋद्धी प्रगटावें, ना क्षीण भोज हो पावें।
ऋषि जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।46।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानस ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अक्षीण महालय पाएँ, लघु जगह में कटक समाएँ।
ऋषि जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।47।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महालय ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि सर्व ऋद्धियाँ पावें ,जो तपधर ध्यान लगावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते ।।48।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धिधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- चौदह सौ बावन गणी, उन्तीस लक्ष्य प्रमाण।
अड़तालीस हजार ऋषि, पूज रहे धर ध्यान ।।49।।

ॐ ह्रीं ऋद्धिधारकेचतुर्विंशति तेर्थेश्वर्राग्रमसमयवर्ति द्विपञ्चाशच्चतुर्दश शतगणधर, एकोन चिंशत्याक्षाष्ट चत्त्वारिंशत सहस्र मुनीन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनधर्म

वत्थु स्वभाव धर्म है पावन रत्नत्रय है धर्म महान।
उत्तम क्षमा आदि दश जानो, विशद मोक्ष है सोपान।।

चैत्य

नौ सौ पच्चिस कोटि लाख हैं त्रेपन सत्तईस हजार।
नौ सौ अड़तालीस अधिक जिन, प्रतिमा पूजें बारम्बार।।

जाप : ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः स्वाहाः। (9, 27, 108 बार जाप करें।

Ist Proof 8.1.2018

समुच्चय जयमाला

दोहा- करें याग मण्डल विशद, यज्ञ में श्रेष्ठ विधान ।
परमेष्ठी का भाव से, करें सभी गुणगान ।।

(मोतियादाम छन्द)

याग मण्डल जो करें विधान, प्राप्त करते वे पुण्य निधान ।
करें वे तीर्थंकर पद प्राप्त, बनें जो कर्म नाश कर आप्त ।।1।।

शरण में आते सुर नर देव,करें जो चरणों की नित सेव ।
करें जो सारे कर्म विनाश, होय फिर सिद्ध शिला पर वास ।।2।।

कहे जो परमेष्ठी आचार्य, भक्ति इनकी करते सब आर्य।
पढ़ाते पढ़ते गुरु उपाध्याय, ज्ञान उनसे हर प्राणी पाय।।3।।

साधु आरम्भ परिग्रह हीन, कहे जो सम्यक् ज्ञान प्रवीण ।
क्षमादिक पालें उत्तम धर्म, क्षीण करने जो अपने कर्म।।4।।

देशना ॐकार मय जान, जगाए प्रभु की सम्यक् ज्ञान ।
जिनालय कृत्रिमाकृत्रिम श्रेष्ठ,लोक में मानव रहे यथेष्ठ ।।5।।

अकृत्रिम हैं जिनबिम्ब महान, कृत्रिम भी होते आभावान ।
देव नव जग में रहे प्रसिद्ध, कार्य सब भक्ती कर हों सिद्ध।।6।।

भक्त कई बनते ऋद्धीवान, करें जो निज आतम कल्याण ।
चले जब तक भी मेरी श्वांस, चरण में रहे प्रभू के वास।।7।।

दोहा- पूजा यज्ञ विधान की, से हो धर्म प्रकाश ।
भवि जीवों का शीघ्र ही , होवे शिवपुर वास ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर जिनमुनिभ्यो समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- सुख शांती आनन्द हो , करके जिन गुणागान ।
शिव पथ के राही बनें, करें 'विशद' कल्याण ।।

इत्याशीर्वादः

Ist Proof 8.1.2018

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्य श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे हरियाणा प्रान्ते महेन्द्रगढ़ जिलान्तर्गत नारनौल नाम नगरे निर्वाण सम्वत् 2543 वि.सं. 2074 ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे सप्तमी गुरुवासरे श्री याग मण्डल विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

Ist Proof 8.1.2018